

सरसों की 7 नई किस्म विकसित



**खाद्य तेल आत्मनिर्भरता में
उल्लेखनीय सफलता**

**आसाम कृषि विश्वविद्यालय
की गुवाहाटी परिसर में
आयोजित हुई वार्षिक संगोष्ठी**

जयपुर। सरसों अनुसंधान निदेशालय भरतपुर के नेतृत्व में अखिल भारतीय राई सरसों के अन्तर्गत देश में कार्यरत विभिन्न केन्द्रों द्वारा विकसित सरसों (लाहा) की 7 एवं एक निजी कम्पनी की संकर किस्म को देश की विभिन्न जलवायुवीय परिस्थितियों के लिए अनुशंसित किया गया है। इन किस्मों को अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान राई-सरसों परियोजना की हाल में आसाम कृषि विश्वविद्यालय के गुवाहाटी परिसर में आयोजित वार्षिक संगोष्ठी में देश की विभिन्न जलवायुवीय परिस्थितियों के लिए जारी किया गया। उद्घाटन सम्बोधन में आसाम के कृषि मंत्री नीलमणी सेन देका ने कहा कि राज्य की खाद्य तेलों की मांग को पूरा करने के लिए तोरिया की प्रचलित किस्मों की उत्पादकता बढ़ाना बहुत जरूरी है।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. एस.के. दत्ता ने फसल सुधार, सही प्रबंधन, सिंचाई सुविधाओं एवं अच्छे समर्थन मूल्यों को देश में तिलहनी उत्पादन की सफलता में सहायक बताया। उन्होंने कहा कि देश के पूर्वी एवं उत्तर-पूर्वी राज्यों के धान-सावठ के करीब 11 मीलियन हैक्टेयर में समय पूर्व पकने वाली राई की किस्मों को उगाने से उन क्षेत्रों में इस फसल के व्यापक विकास की सम्भावना है। आसाम कृषि विश्वविद्यालय जोरहट के कुलपति डॉ. के.एम. बजरबरुआ ने उत्तर-पूर्वी राज्यों में

राई-सरसों उत्पादन तकनीकों के विकास एवं प्रसार की आवश्यकता पर जोर दिया।

इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय भरतपुर के निदेशक डॉ. जे.एस. चौहान ने तोरिया राई एवं सरसों फसल की अखिल भारतीय परियोजना की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बताया कि 17 राज्यों में फैले हुए 23 केन्द्रों द्वारा तोरिया, पीली सरसों, गोभी सरसों, भारतीय राई, करन राई एवं तारामीरा की किस्मों के विकास का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि विगत 10 वर्षों में राई सरसों की 63 उन्नत किस्मों का विकास किया गया है। इस वर्ष 68 उन्नत किस्मों के 152.41 क्विंटल प्रजनक बीज का उत्पादन किया गया है। जिसके परिणामस्वरूप उन्नत किस्मों का व्यापक प्रचार हो सकेगा एवं देश को खाद्य तेलों में आत्मनिर्भर बनाने में अग्रता मिल

ये किस्में जारी



राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, नई दिल्ली एवं जम्मू में देरी से बुवाई हेतु आर.जी.एन.-236 एवं असिंचित परिस्थितियों हेतु आर.जी.एन.-229 तथा आर.एच.0406 को अनुशंषा के लिए चिह्नित किया गया। इन्हीं राज्यों में सिंचित अवस्था में समय पूर्व बुवाई हेतु पीबीआर-357 को संगोष्ठी में अनुशंसित किया गया। इसके अतिरिक्त गुणवत्ता सरसों के वर्ग में ईएलएम-123 तथा लाहा की निजी संस्था की संकर किस्म कोरल-437 को सिंचित अवस्था में समय से बुवाई हेतु पंजाब, हरियाणा, नई दिल्ली, जम्मू एवं राजस्थान के लिए चिह्नित किया गया।

सकेगी। संगोष्ठी में प्रजनक बीज उत्पादन, तकनीकी हस्तांतरण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं किस्मों को चिह्नित किए जाने के साथ मुख्य शोध बिन्दुओं पर क्रमवार चर्चा हुई। जिसमें राई-सरसों की बीमारियों, रोकथाम, संकर किस्मों का उत्पादन, गुणवत्ता सुधार, परम्परागत तकनीकी सुधार आदि पर गहन विचार-विमर्श हुआ।

दो प्रकाशनों का विमोचन



शर्मा, डॉ. अरुण कुमार, डॉ. आर.सी. सचान, गोविन्द प्रसाद एवं लालाराम ने भाग लिया।

इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के दो प्रकाशन भारत में राई-सरसों अनुसंधान कार्यकर्ताओं की डायरेक्ट्री एवं सरसों न्यूज का अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया। सरसों अनुसंधान निदेशालय से निदेशक डॉ. जे.एस. चौहान के अलावा डॉ. वाई.पी. सिंह, डॉ. बी.के. कांडपाल, डॉ. पी.के. राय, डॉ. वी.जी. सिंह, डॉ. एस.के. झा, डॉ. के.एच. सिंह, डॉ. ओ.पी. प्रेमी, डॉ. महाराज सिंह, डॉ. पी.डी. मीणा, डॉ. अशोक

लहलहाती लाहा



सरसों की सात नई उन्नत किस्में

भरतपुर। राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, नई दिल्ली एवं जम्मू में देरी से बुवाई हेतु आर. जी. एन.- २३६ एवं असिंचित परिस्थितियों हेतु आर. जी. एन.-२२९ तथा आर. एच. ०४०६ को अनुशंसा के लिए चिन्हित किया गया। इन्हीं राज्यों में सिंचित अवस्था में समय पूर्व बुवाई हेतु पी. बी. आर.- २००६-९ एवं एन. पी. जे.- ९२४ को तथा सिंचित अवस्था में समय से बुवाई हेतु पी. बी. आर.-३५७ को संगोष्ठी में अनुशंसा के लिए चिन्हित किया गया। इसके अतिरिक्त गुणवत्ता सरसों के वर्ग में ई. एल. एम.-९२३ तथा लाहा की एक हाईब्रिड किस्म कोरल ४३७ को सिंचित अवस्था में समय से

बोआई हेतु पंजाब, हरियाणा, नई दिल्ली, जम्मू एवं राजस्थान के लिए चिन्हित किया गया है। इन किस्मों को अरिबल भारतीय समन्वित अनुसंधान राई-सरसों परियोजना कि हाल में आसाम कृषि विश्वविद्यालय के गुवाहाटी परिसर में आयोजित वार्षिक संगोष्ठी में देश की विभिन्न जलवायु परिस्थितियों के लिए अनुशंसित किया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. स्वपन्न कुमार दत्ता इस संगोष्ठी के मुख्य अतिथि थे एवं आसाम कृषि विश्वविद्यालय, जोरहट के कुलपति डा. के. एम. बजरबुरुआ ने समारोह की अध्यक्षता की।

आसाम के कृषि मंत्री नीलामनी सेन डेका एवं सिंचाई एवं भूमि संरक्षण मंत्री डा. अरदेन्धु कुमार डे ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उद्घाटन सम्बोधन में कृषि मंत्री ने राज्य कि खाद्य तेलों की मांग को पूरा करने के लिए तोरिया की प्रचलित किस्मों कि उत्पादकता बढ़ाने का आह्वान किया। सिंचाई एवं भूमि संरक्षण मंत्री ने सभी संस्थाओं एवं विभागों को मिलकर आसाम राज्य में राई-सरसों का उत्पादन बढ़ाने के लिए कार्य करने पर जोर दिया। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान) डा. एस. के.



विशेष जानकारी के लिए किसान भाई संपर्क करें-

डा. अशोक कुमार शर्मा
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं
जनसम्पर्क अधिकारी
दूरभाष: ०५६४४-
२६०३७९-२६०४९५

देश को खाद्य तेलों में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में उल्लेखनीय सफलता मिली है। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर के नेतृत्व में अरिबल भारतीय राई-सरसों परियोजना के अन्तर्गत देश में कार्यरत विभिन्न केन्द्रों द्वारा विकसित सरसों (लाहा) की सात एवं एक प्राइवेट कम्पनी की हाईब्रिड किस्म को देश की विभिन्न जलवायुविय परिस्थितियों के लिए चिन्हित (अनुशंसित) किया है।

दत्ता ने फसल सुधार, सही प्रबंधन, सिंचाई सुविधाओं एवं अच्छे समर्थन मूल्यों को देश में तिलहन उत्पादन की सफलता में सहायक बताया। उन्होंने कहा कि देश के पूर्वी एवं उत्तरपूर्वी राज्यों के धान-सावट के करीब ९९ मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में समय पूर्व पकने वाली राई की किस्मों को उगाने से उन क्षेत्रों में इस फसल के व्यापक विकास कि संभावना है। आसाम कृषि विश्वविद्यालय, जोरहट के कुलपति डा. के. एम बजरबुरुआ ने उत्तर पूर्व राज्यों में राई- सरसों उत्पादन तकनीको के विकास एवं प्रसार कि आवश्यकता पर जोर दिया। इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के (शेष पेज ७ पर) P.T.O.



सरसों की सात नई...

निदेशक डा. जे. एस. चौहान ने तोरिया, राई एवं सरसों फसल कि अखिल भारतीय परियोजना कि वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की । उन्होने बताया कि १७ राज्यों में फैले हुए २३ केन्द्रों द्वारा तोरिया, पीली सरसों, गोभी सरसों, भारतीय राई, करन राई एवं तारामीरा की किस्मों के विकास का कार्य किया जा रहा है । उन्होंने बताया कि विगत १० वर्षों में राई सरसों कि ६३ उन्नत किस्मों का विकास किया गया है । इस वर्ष ६८ उन्नत किस्मों के १५२.४१ किंचटल प्रजनक बीज का उत्पादन किया गया । जिसके परिणामस्वरूप उन्नत किस्मों का व्यापक प्रसार हो सकेगा एवं देश को खाद्य तेलों में आत्मनिर्भर बनाने में अग्रता मिल सकेगी । डॉ. चौहान ने संगोष्ठी में जानकारी दी कि गत वर्ष देश भर में २३ केन्द्रों द्वारा १६ राज्यों के ६० जिलों में ४२९ प्रथम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया । बैठक में विभिन्न राज्यों के लिए वहाँ की जलवायु, भूमि, संसाधन आदि स्थितियों को ध्यान में रखते हुए राई-सरसों के उत्पादन को बढ़ाने की कार्ययोजना तैयार करने का निर्णय लिया गया । इस संगोष्ठी में प्रजनक बीज उत्पादन, तकनीकि हस्तांतरण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं किस्मों को चिन्हित किये जाने के साथ मुख्य शोध बिन्दुओं का कमवार चर्चा हुई इसमें राई-सरसों बीमारियों, बीमारी की रोकथाम, राई में शंकर किस्मों का उत्पादन, गुणवत्ता सुधार, परम्परागत तकनीकि सुधार, आदि पर गहन विचार विमर्श हुआ । इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के दो प्रकाशनों प्भारत मे राई सरसों अनुसंधान कार्यकर्ताओ की डाइरेक्ट्री ८ एवं प्सरसों न्यूज ८ का भी अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया । सरसों अनुसंधान निदेशालय से निदेशक डा. जे. एस. चौहान के अलावा डा. वाई. पी. सिंह, डा. बी. के. काण्डपाल, डा. पी. के. राय, डा. वी. वी. सिंह, डा. एस. के. झा, डा. के. एच. सिंह, डा. ओ. पी. प्रेमी, डा. महाराज सिंह, डा. पी. डी. मीना, डा. अशोक शर्मा, डा. अरुण कुमार, डा. आर. सी. सचान, गोविन्द प्रसाद एवं श्री लालाराम ने इस संगोष्ठी में भाग लिया ।

सरसों की सात नई किस्में विकसित

ये किस्में हुई चिह्नित

अखिल भारतीय

समन्वित अनुसंधान

राई-सरसों परियोजना

ने किया चिह्नित

कार्यालय संवादबद्धता @ भरतपुर

विभिन्न अनुसंधान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब और जम्मू कश्मीर में सिंचित व असिंचित कृषि भूमि में देरी से बुवाई की सात नई किस्में विकसित की हैं। इनमें आरजीएन-236, आरजीएन-229 व आरएच 406, पीबीआर-2006 -1 व एनपीजे-124, पीबीआर-357, ईएमएल-123 और कोरल-437 को वार्षिक संगोष्ठी में चिह्नित कर दिया गया है।

सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. चौहान ने तोरिया, राई-सरसों फसल की अखिल भारतीय परियोजना की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसमें बताया गया कि देश के 17 राज्यों में 23 अनुसंधान केंद्रों द्वारा पिछले एक दशक में तोरिया, पीली सरसों, गोभी सरसों, भारतीय राई, करन राई तथा तारमिरा फसलों की 63 उन्नत किस्में विकसित की गई हैं। उन्होंने बताया कि इन केंद्रों ने 16 राज्यों के 60 जिलों में प्रथम पंक्ति के 429 प्रदर्शन आयोजित किए गए।

सरसों की सात नई उन्नत किस्में विकसित

सरसों अनुसंधान निदेशालय भरतपुर के नेतृत्व में अखिल भारतीय राई सरसों परियोजना के अंतर्गत देश में कार्यरत विभिन्न केंद्रों द्वारा विकसित सरसों लाहा की सात एवं एक प्राइवेट कम्पनी की हाईब्रिड किस्म को देश की विभिन्न जलवायुविव परिस्थितियों के लिये चिह्नित किया गया है। इन किस्मों को हाल में ही आसाम कृषि विश्वविद्यालय के गुवाहटी परिसर में आयोजित हुए वार्षिक संगोष्ठी में अनुसंसित किया गया है। सरसों अनुसंधान निदेशालय भरतपुर के निदेशक डॉ. जे.एस. चौहान के अनुसार इन चिह्नित नई उन्नत किस्मों में राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, नई दिल्ली एवं जम्मू में देरी से बुवाई के लिए आरजीएन-236 एवं आसंचित परिस्थितियों के लिए आरजीएन -229 तथा आरएच 0406 को अनुशंषा के लिए चिह्नित किया गया है। इन्हीं राज्यों में सिंचित अवस्था के समय पूर्व बुवाई के लिए पीबीआर-2006-1 एवं एनपीजे-124 को तथा सिंचित अवस्था में समय से बुवाई के लिए पीबीआर-357 को संगोष्ठी में अनुशंषा के लिए चिह्नित किया गया है। इसके अतिरिक्त गुणवत्ता सरसों के वर्ग में ईएलएम-123 तथा लाहा की हाईब्रिड किस्म कोरल-437 को सिंचित अवस्था से बुवाई हेतु पंजाब, हरियाणा, नई दिल्ली, जम्मू एवं राजस्थान के लिये चिह्नित किया गया है। सरसों अनुसंधान निदेशालय के जनसम्पर्क अधिकारी अशोक शर्मा ने बताया कि आसाम कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित हुई वार्षिक संगोष्ठी के दौरान निदेशालय के दो प्रकाशनों भारत में राई-सरसों अनुसंधान कार्यकर्ताओं की डायरेक्टरी एवं सरसों न्यूज का विमोचन किया गया साथ ही इस संगोष्ठी में निदेशालय के निदेशक जे.एस. चौहान सहित डॉ. वाई.पी.सिंह, डॉ. वी.के.काण्डपाल, डॉ. पी.के.राय, डॉ. वी.सी.सिंह, डॉ. एस.के.सिंह, डॉ. ओपी प्रेमी, डॉ. महाराज सिंह, डॉ. पी.डी.मीणा, डॉ. अशोक शर्मा, डॉ. अरुण कुमार, डॉ. आर.सी.सचान, गोविन्द प्रसाद, लालाराम ने भाग लिया।

दैनिक स्वच्छता 24 अगस्त 2011

राजस्थान पत्रिका 26 अगस्त 2011

सरसों की सात नई उन्नत किस्में विकसित

मथुरा। राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान निदेशालय भरतपुर के निदेशन में अरविन्द भारतीय राई-सरसों परियोजना के अन्तर्गत देश में सरसों (लाहा) की सात किस्में ईजाद की गई हैं। नई किस्में पुरानी के सापेक्ष उत्पादन में श्रेष्ठ और प्रचलित रोगों के मामले में कहीं तक प्रतिरोधी हैं। इनके विकास से खाद्य तेलों के मामले में विदेशी निर्भरता घटेगी। देश की विभिन्न जलवायु परिस्थितियों के लिए एक हाईब्रिड भी तैयार किया गया है।

राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, नई दिल्ली एवं जम्मू में देरी से बुवाई को आरजीएन-236 एवं असिंचित परिस्थितियों हेतु आरजीएन-229 तथा आरएच-0406 को अनुशांसा के लिए चिह्नित किया गया है।

■ ज्यादा उत्पादन वाली किस्मों से घटेगी खाद्य तेलों के आयात की निर्भरता

■ पुरानी प्रचलित किस्मों के साथ नई किस्में लगाकर लाभ कमाएं किसान

इन्हीं राज्यों में सिंचित अवस्था में समय पूर्व बोआई हेतु पीबीआर-2006-1 एवं एनपीजे -124 को तथा सिंचित अवस्था में समय से बुवाई हेतु पीबीआर-357 को अनुशांसा के लिए चिह्नित किया गया। इसके अतिरिक्त गुणवत्ता सरसों के वर्ग में इंप्लाम-123 तथा लाहा की एक हाईब्रिड किस्म



डा. जेएस चौहान

कोरल- 437 को सिंचित अवस्था में समय से बुवाई हेतु पंजाब, हरियाणा, नई दिल्ली, जम्मू एवं राजस्थान के लिए चिह्नित किया गया है। सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डा. जेएस चौहान ने बताया कि 17 राज्यों में फैले 23 केन्द्रों द्वारा तोरिया, पीली सरसों, गोभी सरसों, भारतीय राई, करन राई एवं

तारामीरा की किस्मों के विकास का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि विगत 10 वर्षों में राई सरसों की 63 उन्नत किस्मों का विकास किया गया है। इस वर्ष 68 उन्नत किस्मों के 152.41 कुंतल प्रजनक बीज का उत्पादन किया गया है जिसके परिणाम स्वरूप उन्नत किस्मों का व्यापक प्रसार हो सकेगा।

इन किस्मों का बीज किसानों को अगले साल ही मिल पाएगा लेकिन एनआरसीडीआर-2, एनआरसीएचबी101, डा. केएच सिंह द्वारा तैयार हाईब्रिड का बीज 15 सितंबर से किसानों के लिए सस्ती दर पर मिल सकेगा। इसके अलावा अन्य प्रचलित किस्मों का बीज भी बाजार से करीब आधी कीमत पर ही किसानों को दिया जाना है।